# ''आर्यापञ्चशती' में आधुनिक चेतना''

**डॉ० सुधा मिश्र**

'आर्यापञ्चशती' डा० जयमन्त मिश्र की प्रकाशित रचना है जिसमें आर्या छन्द के पाँच सौ पद्य कवि ने धार्मिक तथा आध्यात्मिक विषयों पर लिखे हैं। मुख्यतः कृष्णावतार और कृष्ण भक्ति से जुड़े हुए कवि ने इस विषय की प्रधानता इस पुस्तक में रखी है। इसके अन्तिम शतक में अपने परिवेश की विकृतियों पर भी कवि की दृष्टि गयी है। आधुनिक भारतीय चिकित्सक, अधिवक्ता, मन्त्री, नेता, अभिनेता, अभिलेत्री इत्यादि प्रमुख व्यसायों की कुत्सित वृत्तियों का निरूपण कवि ने इस आशा से किया है कि वे इसका संशोधन करेंगे और भारतवर्ष को आदर्श भूमि बनायेंगे।

'आर्यापञ्चशती' कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित डॉ० जयमन्त मिश्र की प्रकाशित काव्यकृति है। इसका रचनाकाल 1998 ई० है। इसमें आचार्य कवि के द्वारा आर्या छन्द में रचित पाँच सौ पद्यों का संकलन है। इस छन्द के प्रयोग के विषय में कवि ने अनेक स्थलों पर स्वतंत्रता का उपयोग करते हुए इसके शास्त्रीय लक्षण का यद्यपि अतिक्रमण किया है तथापि अपनी भावभूमिका के कारण यह कृति वयोवृद्ध कवि की धार्मिक तथा आध्यात्मिक चेतना का सम्यक् प्रतिफलन है। जगन्नाथपुरी के शंकराचार्य निश्चलानन्द सरस्वती ने इसकी भूमिका में स्पष्ट किया है कि हलादिनी शक्ति की प्रधानता से पूर्ण श्री कृष्णावतार के विषय में कवि ने इस पञ्चशती में अपने परिपक्व विचार प्रस्तुत किये हैं।